डायन के पास हजारों को मारने की असीमित शक्ति तो जब किसी महिला को डायन घोषित कर मारते हैं क्यों नहीं बचा पाती खुद की जान ?

एक और बात सुनने में आती है कि डायन से सिर्फ तांत्रिक ही मुकाबला कर सकता है, कहते हैं कि तांत्रिक के पास भी बड़ी-बड़ी शक्तियां होती हैं, वह कितनी भी बीमारी हो एक ही बार में ठीक कर देता है। तब मैं ये पूछता हूं कि हमारे देश में और छत्तीसगढ़ में इतने अस्पताल और डॉक्टरों की बाढ़ कैसे आ गई है...

गनपत लाल

गांव और शहर, अनपढ़ और पढ़े-लिखे व्यक्ति सब लोग डायन और भूत के भय के कारण थरथर कापते रहते हैं। जब हम छत्तीसगढ़ की बात करते हैं तो यहां के लोग डायन और भूत की कहानी सुनाने लग जाते हैं। और डर के कारण अच्छे-अच्छे लोग के पसीने निकल जाते हैं। कोई झूठी बात को बार-बार और जगह-जगह बोलने से वे बातें सच्ची जैसी लगती हैं। अभी तक मैं जितनी भी बात सुना हूं, उसके लिए मुझे सख्त प्रमाण नहीं मिला। सब हवा-हवाई बातें बताते हैं।

गांव के कुछ ओझा-तांत्रिक (बइगा-गुनिया) से भी बातचीत की, फिर वे लोग भी गोल-मटोल और उल्टा-पुलटा ढंग से जवाब दिए। हमारे पढ़े-लिखे समाज में आज भी महिलाओं को डायन के नाम पर लगातार मारने की घटना घोर अंधविश्वास को दिखाती है। सोचने की बात यह है कि आज पढ़े-लिखे व्यक्ति भी गांव के अनपढ़ व्यक्ति की काल्पनिक कहानी को मानकर उससे भी आगे निकल गयी हैं। जबकि पढ़े-लिखे व्यक्ति को चाहिए कि अंधविश्वास के कुंआ में डूबते हुए जनमानस को निकाले। लेकिन क्या करें ये लोग अंधविश्वास और झूठी बातों के तूफान में उड़ रहे हैं।

छोटी सी उम्र से सुनते आ रहा हूं कि डायन (टोनही) के पास ऐसी शक्ति होती है कि वे हजारों लोगों को एक अकेले मार सकती है। आग और पानी भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। तब मैं ये पूछना चाहता हूं कि गांव में कोई महिला को डायन कहकर लोग मारते हैं, तब उस समय वह अपनी जान को क्यों नहीं बचा पाती। अपनी जान को नहीं बचा सकती वह बेचारी क्या दूसरे की जान ले सकती है और दूसरे के अहित कर सकती है।

एक और बात सुनने में आती है कि डायन से सिर्फ तांत्रिक ही मुकाबला कर सकता है, कहते हैं कि तांत्रिक के पास भी बड़ी-बड़ी शक्तियां होती हैं। वह कितनी भी बीमारी हो एक ही बार में ठीक कर देता है। तब मैं ये पूछता हूं कि हमारे देश में और छत्तीसगढ़ में इतने अस्पताल और डॉक्टरों की बाढ़ कैसे आ गई है।

तांत्रिक से बीमारियों का इलाज होता तो अस्पताल में भीड़ नहीं होती

गांव के तांत्रिक के पास सभी बीमारियों का इलाज होता तो ये भीड़ अस्पताल में नहीं दिखती। जो तांत्रिक सभी बीमारियों और समस्या के निपटारे की बात करते हैं वे खुद डॉक्टर के अस्पताल में क्यों इलाज कराते हैं, उसके पास तो सभी बीमारियों से निपटने की शक्ति है, तो खुद का इलाज क्यों नहीं करते। जादू-टोना, ओझा-तांत्रिक समाज के अंदर समा गए हैं जो समाज के लिए बहुत खतरनाक है। जब तक इस बीमारी का नाश नहीं होता है, तब तक लोग डर-डर कर मरते रहेंगे।

गांव में आज भी कोई व्यक्ति को बुखार

और दूसरी बीमारी होती है तो वे डॉक्टर को नहीं दिखा कर ओझा-तांत्रिक के पास जाते हैं। भले उसकी जान चली जाए। एक मेरे करीबी के पढ़े-लिखे व्यक्ति जिसकी बच्ची के शरीर में खाज-खुजली हो गई थी, वे तांत्रिक के पास झाड़-फूंक करवाता था। इस ओझा-तांत्रिक के चक्कर में डॉक्टरी इलाज नहीं हो पाया तो उसकी बच्ची की खुजली शरीर में फैलने लगी तब मैं इसको कहा कि इसका इलाज कोई चर्म रोग विशेषज्ञ से कराए, तब वे मेरी बात को बहुत मुश्किल से माना और डॉक्टर के पास ले गए तब जाकर वह बच्ची ठीक हुई।

सरकार आंख बंदकर देख रही तमाशा

अब जो कॉलेज और यूनिवर्सिटी में पढ़े हैं और जो पढ़-पढ़ा रहे हैं। वे भी ऐसे झाड़-फूंक में विश्वास करते हैं तो गांव के साधारण व्यक्ति से क्या उम्मीद कर सकते हैं। गांव के अनपढ़ लोग तो ये पढ़े-लिखे (डिग्रीधारी) लोगों को देखकर उसके पीछे-पीछे जाते हैं। इस प्रकार के समाज में अंधविश्वास को फैलाने में ये पढ़े-लिखे अंधविश्वासी लोग का बड़ा हाथ है। वैसे अगर तांत्रिक की बात करें तो ये लोग बीमार व्यक्ति को टोटके और भूत-प्रेत, डायन, प्रेत के भय दिखा के पैसा लूटता है। ऐसे अंधविश्वास फैलाने वालों पर कठोर कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए। जिससे हमारा समाज को अंधविश्वास की दलदल से बचाया जा सके, लेकिन सरकार आंख बंदकर तमाशा देख रही है।

बचपन में सुनी हुई काल्पनिक कहानियां कोमल मन में डालती है खतरनाक प्रभाव

जानकार लोग कहते हैं कि बचपन में सुनी हुई काल्पनिक कहानियां बच्चों के कोमल मन में खतरनाक प्रभाव डालती है। जिससे वे व्यक्ति जीवन भर नहीं निकल पाता है। मनुष्य बच्चे के जन्म होते ही उसके गले पर ताबीज और हाथ में काला धागा, यहां तक के उसके पैर में भी काला धागा बांध देते हैं। ये अंधविश्वास के धागे फिर जीवन भर नहीं छूटते। जब बच्चे अपने माता-पिता से पूछते हैं कि ये धागे और ताबीज-कंडा को किसलिए पहने, तब वे बच्चे को डांटकर चुप करा देते हैं। नहीं तो तरह-तरह के प्रेत और डायन की कहानियां सुनाकर बच्चे का मनोबल गिराया जाता है, जो उस बच्चे की उम्रभर कष्ट देता है।

ऐसे में कैसे विज्ञान को पढ़ और समझ पाएंगे बच्चे

जब वे बच्चे जानने-समझने के लायक बड़े हो जाते हैं,तब भी से वे वैज्ञानिक सोच को नहीं अपना सकता और अंधविश्वास की बेड़ी में बंधे रहते हैं। अब सोचने वाली बात यह है कि जो बच्चे विज्ञान और गणित की पढ़ाई करते हैं, वे भी मंत्र-तंत्र, भूत-प्रेत, डायन जैसी चीजों पर विश्वास करते हैं और ताबीज-कंडा लटकाकर घूमते हैं।

तब उस बच्चे पर मुझे तरस आता है कि ये क्या विज्ञान को समझ पाएगा और क्या मिसाइल और विज्ञान के क्षेत्र में खोज कर पाएगा और क्या डॉक्टर बनकर मरीज को बचा पाएगा ? अब देश-समाज को बचाना है तो अपने बच्चे को वैज्ञानिक और प्रगतिशील विचार को बताएं और सिखाएं। काल्पनिक बातों और अंधविश्वासों का खुलकर विरोध करें, तब हमारी आने वाली पीढ़ी बच पाएगी।

-साइबर नजर

मित्रता !

मित्रता परमोधर्म

संसद में प्रधानमंत्री मोदी ने अदाणी मुद्दे पर कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के सवालों के जवाब में एक कहानी सुनाई, एक बार जंगल में दो नौजवान शिकार करने गये थे... वो गाड़ी में अपनी बंदूक रखकर नीचे उतरकर टहलने लगे, तो बाघ का शिकार करने थे... सोचा था कि आगे बाघ दिखेगा, लेकिन बाघ वहीं आ गया... अब करें तो करें क्या? बाघ को लाइसेंस दिखाया... देखो हमारे पास बंदूक का लाइसेंस है। अब कहानीकार भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी थे तो परंपरा अनुसार को सत्तारूढ़ दल के माननीय सांसदों ने खुब शोर-शराबा, हास्य-विनोद करते हुए मेज़ें थपथपाई और बेहद, हर्षोल्लास किया। मोदी जी का जबरदस्त लच्छेदार भाषण सुनकर मेरा भी मन किया क्यों ना अपने प्रबुद्ध पाठकों को इस कहानी समकक्ष एक दुसरी कहानी भी दिखाई जाए। आशा है कि आपके साथ-साथ मोदी जी को भी यह कहानी पसंद आएगी।

महिलारोप्य नाम का एक शहर था। वहाँ बरगद के एक पेड़ पर लघुपतनक नाम का एक कौआ रहता था। एक दिन वह भोजन की खोज में जा रहा था तभी जाल लेकर एक शिकारी को पेड़ की ओर आता देखा। शिकारी ने पेड़ के नीचे जाल फैलाकर अनाज के दाने बिखेर दिए। उसी समय चित्रग्रीव नाम का एक कबूतरों का राजा अपने कबूतर दल के साथ उड़ता हुआ वहाँ आया। बिखरे हुए अनाज के दानों को देखकर कबूतर अपना लोभ न रोक सके और दाने चुगने के लिए नीचे उतर आए। पेड़ के पीछे छुपे हुए शिकारी ने जाल को खींच लिया और सभी कबूतर जाल में फँस गए। चित्रग्रीव बहुत ही चतुर था। उसने शेष कबूतरों से कहा, मित्रों डरो मत! हमलोग एक साथ जाल लेकर उड़ जाएँगे और सुरक्षित स्थान पर चले जाएँगे जहाँ शिकारी न आ पाए। तैयार हो जाओ, एक...दो...तीन। सभी कबूतर एकसाथ जाल लेकर उड़ गए। शिकारी ने काफ़ी दूर तक उनका पीछा किया पर वे आँखों से ओझल हो गए। शिकारी के लौट जाने पर चित्रग्रीव ने कबूतरों से कहा, चलो हमसब महिलारोप्य शहर चलें जहाँ मेरा मित्र हिरण्यक चूहा रहता है। इस जाल के बाहर निकलने में वह हमारी सहायता करेगा। वहाँ पहुंचकर चित्रग्रीव ने आवाज़ दी मित्र हिरण्यक, कृपया बाहर आओ। मैं तुम्हारा मित्र चित्रग्रीव कठिनाई में हूं, हमारी सहायता करो।

हिरण्यक अपने मित्र को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ और बोला, ठीक है, तुम राजा हो इसलिए मैं पहले तुम्हें बाहर निकालने में सहायता करूँगा फिर शेष कबूतरों को निकालूंगा। चित्रग्रीव ने हिरण्यक को मना करते हुए कहा, कृपया पहले मेरे मित्रों के बंधन काटो। अपने लोगों का ख्याल रखना राजा का प्रथम कर्तव्य है। चित्रग्रीव का प्रेम देखकर हिरण्यक बहुत प्रसन्न हुआ और बोला मैं राजा का कर्म और कर्तव्य जानता हूं। मैं सभी के बन्धन काट दूंगा।' हिरण्यक ने अपने साथी चूहों के साथ मिलकर अपने तीखे दाँतों से पूरे जाल को काट डाला और सभी कबूतरों को आज़ाद कर दिया। चित्रग्रीव ने हिरण्यक और उसके साथियों का धन्यवाद किया और अपने दल के साथ उड़ गया।

कहानीकार, मोदी जी, यहीं नहीं रूके, एकाएक मोदी जी के अंदर का कवि जाग गया और कांग्रेस और राहुल गांधी पर अपरोक्ष रूप तंज कसते हुए एक अकेला सब पर भारी का नारा देते हुए मोदी जी ने अपनी छाती खुद थपथपा डाली। साथ ही मोदी ने हास्य व्यंग्य के मशहूर कवि रहे काका हाथरसी की कविता सुनाई। कविता में मोदी ने कहा कि लोग निराशा में डूबे हुए हैं, आगा पीछा देख कर क्यों होते गमगीन, जैसी जिसकी भावना वैसा दिखे सीन! वहा भाई मज़ा आ गया -कविता सुनकर अनायास ही मेरे मुंह से निकल गया -वाह मोदी जी वाह ! इसी दरमियान मेरी नज़र कबीरदास जी के रचित एक दोहे पर पड़ी सोचा, लगे हाथ वो भी पेश कर दूं! कबीरदास जी कहते हैं,

मैं मैं बड़ी बलाई है, सके निकल तो निकले भाग।

कहे कबीर कब लग रहे, रुई लपेटी आग।।'

भावार्थ!

व्यक्ति का अहम उसकी उन्नति के मार्ग पर बहुत बड़ी बाधा है। अहंकार में चूर व्यक्ति को उसका घमंड बहुत प्यारा होता है, किंतु वह यह नहीं जान पाता कि यही अहम उसे धीरे-धीरे विनाश की ओर अग्रसर करता जा रहा है। कवि ने यही समझाने के लिए प्रस्तुत दोहे में बताया है कि अहंकार व्यक्ति के लिए कितना भयावह है। दोहे की प्रथम पंक्ति में कबीरदास जी कहते हैं कि यह मैं'- बहुत बड़ी बला है।

जाना था जापान, पंहुच गये चीन!

उपरोक्त सारे कथन का लब्बोलुआब यह है अपने 88 मिनट के भाषण में मोदी जी ने उठाए गए एक भी सवाल का जवाब नहीं दिया अपितु अपनी बातों को गोल-गोल जलेबी की तरह घुमाते रहे! अपने 88 मिनट के मैराथन भाषण में मोदी जी ने अदाणी का अ तक नहीं कहा!

राहुल गांधी के सवाल और मोदी के कटाक्ष!

राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री से पूछा, विदेश यात्रा पर कितनी बार गौतम अदानी प्रधानमंत्री के साथ गए?

जवाब में प्रधानमंत्री मोदी ने काका हाथरसी से लेकर दुष्यंत कुमार की कविताएं सुना दी।

राहुल ने प्रधानमंत्री से पूछा कि गौतम अदानी ने कितनी यात्राओं में पीछे से प्रधानमंत्री को ज्वाइन किया?

जवाब में प्रधानमंत्री जी ने बाघ को बंदूक का लाइसेंस दिखाने वाला किस्सा सुना डाला।

राहुल गांधी ने सवाल किया कि प्रधानमंत्री के किसी देश में पहुंचने के तुरंत बाद अदानी वहां पर कितने बार पहुंचे?

मोदी जी ने कहा ये निराशा भी ऐसे नहीं आई... एक तो जनता का हुकुम, बार-बार हुकुम... कुछ अच्छा होता है निराशा और उभरकर सामने आ जाती है।

राहुल का सवाल! प्रधानमंत्री के किसी देश में पहुंचने के तुरंत बाद अदानी वहां पर कितने बार पहुंचे? जवाब में मोदी जी का किस्सा कि कैसे कांग्रेस की सरकार ने बेरोजगारी खत्म करने के नाम पर कानून दिखा दिया- और अपने तरीके से पल्ला झाड़ लिया था।

राहुल गांधी का सवाल! कितने ऐसे देश हैं जिन्होंने पीएम की यात्रा के बाद गौतम अदानी को कॉन्ट्रैक्ट दिए हैं?

जवाब में मोदी ने दुष्यंत कुमार की भी एक कविता सुनायी, तुम्हारे पांव के नीचे कोई जमीन नहीं, कमाल ये है... कमाल ये है कि फिर भी तुम्हे यकीं नहीं है!

राहुल का अगला सवाल! अदानी ने बीजेपी को पिछले बीस साल में कितने पैसे दिए हैं?

इस पर मोदी जी, बोले, ...कुछ लोग बोल रहे थे तो पूरा इकोसिस्टम उछल रहा था... कल नींद भी अच्छी आई होगी, और शायद आज वे उठ भी नहीं पाये होंगे... कुछ लोग तो ये भी कह रहे थे... ये हुई न बात।

राहुल का आखरी सवाल! अदानी ने इलेक्टोरल बॉन्ड में कितना पैसा दिया है?

जवाब में मोदी जी की अंतिम कविता, कुछ लोग कह रहे हैं... ये कह कह कर हम दिल को बहला रहे हैं... वो अब चल चुके हैं, वो अब आ रहे हैं।

-धीरज